माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म- प्रभावकारिता और शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

प्रो. सविता श्रीवास्तव
शोध निर्देशिका

शंकर दयाल राजन
शोधार्थी

फाउंडेशन ऑफ़ एजुकेशन विभाग, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा - 282005

2024

1.0.0 प्रस्तावना

इक्कीसवी शताब्दी के आधुनिक भूमंडलीय युग में किसी भी राष्ट्र के लिए उसके भौतिक एवं मानव संसाधनों का अत्यंत महत्त्व है यह संसाधन ही उसे अग्रणी राष्ट्रों के कतार में खड़ा करने में सक्षम बनाते है परन्तु भौतिक संसाधनों की उपलब्धता सीमित एवं प्रकृतिजन्य होने के कारण वर्तमान युग में मानव संसाधनों के विकास पर जोर दिया जाने लगा है। निःसन्देह किसी भी राष्ट्र एवं समाज के विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साधन मानव ही है, एवं मानव को पृथ्वी का सबसे विलक्षण,विचारशील तथा सक्रिय प्राणी माना जाता है। अपनी मानसिक क्षमता, तार्किक प्रक्रिया तथा सृजनात्मक शक्ति के आधार पर ही मानव ने ब्रह्माण्ड की परिधि को लांघा है। अब मानव केवल पृथ्वी तक ही सीमित नहीं है अपितु वह अब ब्रह्माण्ड में भी अपनी उपस्थिति दर्ज करता जा रहा है इसलिए आज के विकासशील युग में राष्ट्र के विकास में राष्ट्र की बौद्धिक सम्पदा मानव को महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

प्रत्येक मनुष्य के अन्दर कुछ जन्मजात शक्तियां निहित होती है, इन शक्तियों के प्रस्फुटन से ही मानव का विकास होता है। यदि इन शक्तियों को प्रस्फुटित होने के पर्याप्त अवसर नहीं प्राप्त होते हैं तव मानव का विकास अधूरा रह जाता है तथा वह अपनी अंतर्निहित अप्रस्फुटित योग्यताओं का लाभ उठाने से वंचित रह जाता है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र अपने नागरिकों की जन्मजात तथा अंतर्निहित योग्यताओं के अधिकतम विकास के लिए सचेत रहता है और इसके विकास के लिए शिक्षा प्रणाली की व्यवस्था करता है। निःसंदेह शिक्षा प्रणाली मानव की योग्यताओं के अधिकतम विकास के लिए सर्वाधिक सरल, व्यवस्थित एवं प्रभावशाली व्यवस्था है। शिक्षा मानव की शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक शक्तियों का विकास करती है। शिक्षा के द्वारा ही मानव की जन्मजात शक्तियों का अधिकतम विकास करके उसके ज्ञान, बोध एवं कौशल में वृद्धि की जाती है।

शिक्षा प्रदान करने की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी शिक्षक के कंधों पर है, शिक्षक ही शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संर्वागीण विकास करके उनके व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन लाकर तथा उन्हें विश्व, राष्ट्र और समाज के आदर्श नागरिकों के रूप में रचनात्मक भूमिका निभाने के लिए तैयार करता है।

प्राचीन काल से ही शिक्षक का समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है जो उसके समाज के प्रति निर्वहन किये जाने वाले कर्तव्यों के संदर्भो में देखा जाता है।

अलतेकर ने अपनी पुस्तक “प्राचीन कालीन शिक्षा व्यवस्था”(2014) में शिक्षक के कर्तव्य को इंगित करते हुए लिखते है, “अध्यापन के अतिरिक्त आचार्य के और भी कर्तव्य होते है। उसे शिष्य का मानस पिता माना गया था। अतः नैतिक दृष्टि से शिष्य के समस्त दोषों का उत्तरदायित्व उस पर था। शिष्य के चरित्र का सर्वदा ध्यान रखना उसका कर्तव्य था”।

शिक्षकों के कर्त्तव्यों पर प्रकाश डालते हुए ‘शिक्षा आयोग’ (1964-66) ने कहा है कि, “हम चाहे जितनी भी अच्छी योजनाओं व नीतियां क्यों न बना लें उसकी सफलता एवं असफलता इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक उसे कितने उत्साह से शिक्षा में क्रियान्वित करते हैं”।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार, में शिक्षक को राष्ट्र निर्माता के रूप में स्वीकार करते हुए कहा गया है कि शिक्षक वास्तव में विद्यार्थियों के भविष्य को आकार देते हैं, इसलिए वे हमारे राष्ट्र के भविष्य के निर्माता है । इस महान योगदान के कारण शिक्षक भारतीय समाज के सबसे सम्मानित सदस्यों में से एक है और केवल सर्वश्रेष्ठ विद्वान ही शिक्षक बनते हैं। (शिक्षा मंत्रालय,राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020)।

1.1.1 शिक्षक व्यवहार (Teacher Behaviour)

शिक्षक व्यवहार से तात्पर्य कक्षा में शिक्षक द्वारा प्रदर्शित सामाजिक अन्तःक्रिया और अनुदेशात्मक क्रियाओं से हैं जिससे वे विद्यार्थियों को प्रभावित करते है। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण कारक है शिक्षक का विद्यार्थियों के साथ संवाद करने का तरीका उन्हें सीधे तौर पर प्रभावित करता है यह विद्यार्थिओं की सीखने की क्षमता और प्रेरणा को प्रभावित कर सकता है। यह न केवल सीखने की प्रक्रिया बल्कि विद्यार्थियों के समस्त विकास को भी प्रभावित करता है। शिक्षक केवल ज्ञान के संवाहक नहीं है अपितु वे कक्षा के माहौल के वास्तुकार है। शिक्षक सहभागिता, प्रेरणा और शैक्षिक विकास के लिए आधार तैयार करते है, जो विद्यार्थियों के सीखने एवं अनुभवों को साकार रूप प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जहां पर विद्यार्थी शैक्षिक, मानसिक और सामाजिक रूप से आगे बढ़ते हैं।

रेयान्स (1970) के अनुसार, “शिक्षक व्यवहार से तात्पर्य किसी व्यक्ति के उन सभी कार्यों एवं व्यवहारों से है जिसे करने में एक शिक्षक सक्षम माना जाता है विशेष रूप से वे गतिविधियां जो दूसरों के सीखने और मार्गदर्शन से सम्बन्धित है”।

1.1.2. शिक्षक का कक्षागत व्यवहार

रेयान्स ने शिक्षक के कक्षागत व्यवहार के दो प्रकारों का वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैं -

शाब्दिक व्यवहार - कक्षा में जब शिक्षक और विद्यार्थी बोलकर संवाद करते है तो इस व्यवहार को शाब्दिक व्यवहार कहा जाता है। इसमें रूचि का माध्यम मौलिक, लिखित एवं प्रतीकात्मक होता है। शिक्षक का शाब्दिक व्यवहार एक विशेष वातावरण का निर्माण करता है। वह विद्यार्थियों को स्वतंत्र प्रतिक्रियाओं के द्वारा प्रोत्साहित या हतोत्साहित करता है। शिक्षक कक्षा में विद्यार्थियों को कितनी स्वतंत्रता देता है? इस आधार पर भी शिक्षक के शाब्दिक व्यवहार को दो भागों में बांटा जा सकता है-

(क) प्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार – प्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार वह व्यवहार होता है जिसमें शिक्षक कक्षा में अपना प्रभाव और प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयास करता है। विद्यार्थियों के विचारों और व्यवहार की आलोचना करता है तथा कक्षा में विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से बोलने का अवसर नहीं देता है।

(ख) अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार - जब शिक्षक विद्यार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता देता है तो इस प्रकार के व्यवहार को अप्रत्यक्ष शाब्दिक व्यवहार कहते है। शिक्षक विद्यार्थियों के विचारों को स्वीकार करता है और समझता है। वह विद्यार्थियों पर अपने विचार मानने के लिए दबाव नहीं डालता है। शिक्षाविद फ्लैण्डर (1959) के अनुसार, इस प्रकार के शाब्दिक व्यवहार को समन्वय व्यवहार भी कहते हैं। जिसमें शिक्षक कम बोलता है और विद्यार्थियों को बोलने के अधिक अवसर प्रदान करता है। वह विद्यार्थियों की समस्याओं को समझते हैं और उनका समाधान करने का प्रयास करता है, ऐसा शिक्षक अधिक प्रश्न पूछता है, जिससे विद्यार्थियों को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रहने की प्रेरणा मिलती है।

अशाब्दिक व्यवहार - शिक्षण सम्बन्धी अधिकांश गतिविधियां शाब्दिक सम्प्रेषण द्वारा आदान-प्रदान की जाती है हालांकि कक्षा में गैर-शाब्दिक व्यवहार भी होता है जो कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। अशाब्दिक व्यवहार वह व्यवहार है जिसमें भावनाओं और विचारों का संचार विद्यार्थियों और शिक्षक के मध्य इशारों के माध्यम से होता है, विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षक का सिर हिलाना, विद्यार्थियों के बोलने, मुस्कराने, भौहें चढ़ाने आदि से रोकने के लिए उंगली का प्रयोग करना। जैसे- शिक्षक किसी विद्यार्थी के गलत-कार्य को देखकर गुस्से से लाल-पीला हो जाता है तो

निश्चित ही विद्यार्थी समझ जाता है कि उसे यह कार्य नहीं करना चाहिए । यदि शिक्षक चेहरे पर मुस्कान लाता है, तनाव कम करता है और जब कोई विद्यार्थी कोई सही कार्य करता है तो फिर शिक्षक प्रसन्नचित होकर सिर हिलाता है तब विद्यार्थी उस कार्य को करने के लिए अधिक प्रोत्साहित होता है। ऐसी भाव भंगिमाओं द्वारा विचारों का आदान-प्रदान अशाब्दिक व्यवहार कहलाता है।

मेयो एवं लाफ़्रेंसे (1978) के अनुसार, प्रभावी शिक्षण के लिए आवश्यक है, कि शिक्षक की भाषा पर बहुत अधिक ध्यान दिया जाये। एक सकारात्मक कक्षा संचार और कक्षा में सक्रिय वातावरण के निर्माण के लिए सावधानीपूर्वक चुनी गई बातों पर ध्यान दिया जाये लेकिन जिस तरह से गैर-शाब्दिक संदेशों को वितरित किया जाता है, वह शब्दों की तुलना में विद्यार्थियों की समझ में अधिक योगदान दे सकता है खासकर आठ वर्ष की आयु से अधिक बच्चे के लिए क्योंकि छोटे बच्चे उन शब्दों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, जो शिक्षक उपयोग करते है और बड़े बच्चे गैर-शाब्दिक व्यवहार पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, वह समझने की कोशिश करते हैं। शिक्षक मुझसे वास्तव में क्या उम्मीद करते/करती है। आहुजा,एस.(2009) के अनुसार, अशाब्दिक सम्प्रेषण कक्षा में अनुशासन बनाये रखने में मदद करता है, विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने में मदद करता है, कक्षा में बातचीत में सुधार करता है और कक्षा के वातावरण को सक्रिय और सीखने के लिए अनुकूल बनाता है।

1.1.3. शिक्षक का पारस्परिक व्यवहार (Teacher Interpersonal Behaviour)

शिक्षक पारस्परिक व्यवहार से तात्पर्य संचार के उस तरीके से है जिस तरीके से शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सवांद करते है इसमे विभिन्न पहलु जैसे मौखिक एवं गैर-मौखिक संचार, भावनात्मक समर्थन और सहानुभूति, प्रतिक्रिया और प्रोत्साहन, शारीरिक भाषा और शैली एवं समस्या समाधान आदि शामिल होते हैं। कक्षा-संचालन (शिक्षण कार्य करते समय) की स्थिति में शिक्षक विभिन्न पारस्परिक व्यवहारों का उपयोग करते हैं, जिसमें से सकारात्मक व्यवहार सफल शिक्षण को उत्पन्न करता है और नकारात्मक व्यवहार विद्यार्थियों के बीच नकारात्मक दृष्टिकोण को उत्पन्न करता है। जब विद्यार्थी नई कक्षा में शिक्षक से मिलते हैं तब वे अपने शिक्षक के प्रति किसी भी धारणा को धारण करने के लिए खुले हुए होते है हालांकि वे शिक्षक के प्रति उनकी रूढ़िवादी अपेक्षाओं से प्रभावित हो सकते हैं,लेकिन जैसे-जैसे कक्षा में शिक्षक और विद्यार्थी के मध्य शिक्षण और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान अंत:क्रिया (Interaction) होती है, तव

विद्यार्थी अपने शिक्षक के साथ उभरते सम्बन्धों के बारे में अवधारणा को विकसित करना शुरु कर देते हैं। अंततः कई पाठों के अध्ययन के बाद विद्यार्थियों की शिक्षकों के प्रति अस्थायी अवधारणा स्थिर होने लगती है, तब वह बता सकते हैं कि उनका शिक्षक किस प्रकार का है। अवधारणाओं का यह क्रमिक स्थिरीकरण शिक्षकों और विद्यार्थियों पर सामान रूप से लागू होता है एक बार धारणा स्थिर हो जाने पर इसे संशोधित करना मुश्किल होता है। (ब्लुमेंफेल्ड एवं मीस,1985) के अनुसार, जब सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने की बात आती है, तो शिक्षक का व्यवहार एक महत्त्वपूर्ण कारक होता है क्योंकि शिक्षण और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शिक्षक का पारस्परिक व्यवहार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

पारस्परिक व्यवहार या संचार शैली शिक्षक के व्यक्तित्व का अध्ययन नहीं है हालांकि कुछ विवरण यह धारणा दे सकते हैं कि कोई विशेष शिक्षक मिलनसार, देखभाल करने वाला या विनोदी है या कोई अन्य सत्तावादी या आक्रामक है। शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का परिपेक्ष्य कक्षा शिक्षण के दौरान शिक्षकों के पारस्परिक शैक्षिक व्यवहारों के प्रति विद्यार्थियों की सम्बन्धित शिक्षक के प्रति बनने वाली अवधारणाओं से हैं। इन अवधारणाओं का उपयोग शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार के नमूने (Pattern) को संदर्भित करने से है, जो शिक्षक-विद्यार्थी संबंधो और उनके हितों को प्रभावित करता है।

1.1.4. शिक्षक पारस्परिक व्यवहार प्रतिमान (Model of Teacher Interpersonal Behaviour)

कक्षा में कुछ शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करने का प्रयास करते हैं जबकि अन्य अधिक दूरी बनाये रखते हैं। विभिन्न शिक्षकों द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान उपयोग की जाने वाली विभिन्न रणनीतियां शिक्षकों और विद्यार्थियों के बीच संबंधों के विभिन्न पैटर्न बनाती है। शैक्षिक संदर्भो में शोधार्थियों ने शिक्षक-विद्यार्थी अंत:क्रिया को शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार के संदर्भ में अवधारणाबद्ध किया और शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार का एक मजबूत सैद्धान्तिक प्रतिमान तैयार किया। यह प्रतिमान व्यक्तित्व के पारस्परिक निदान के लिए लैरी टिमोथी (1957) द्वारा निर्मित 'व्यक्तित्व का पारस्परिक वृत्त प्रतिमान' पर आधारित है। लैरी का यह प्रतिमान दो प्रतिच्छेदी आयाम एक 'प्रभुत्व-प्रस्तुति' ओर दूसरा 'प्रेम-नफरत' पर आधारित था। लैरी के इसी प्रतिमान के आधार पर बुवेल्स एवं अन्य (1985) ने पारस्परिक शिक्षक व्यवहार के लिए एक प्रतिमान 'शिक्षक पारस्परिक व्यवहार प्रतिमान' (MITB) विकसित किया। यह प्रतिमान शिक्षक और विद्यार्थी संबंधों को दो पारस्परिक आयामों 'प्रभाव और निकटता', के संदर्भ में दर्शाता और

जांचता है । प्रभाव उस स्थिति को संदर्भित करता है जहां तक शिक्षक कक्षा में संचार को नियंत्रित करता है। और निकटता उस स्थिति को संदर्भित करता है जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों का सहयोग करता है। निकटता (प्रभुत्व-अधीनता) और प्रभाव (असहमति-असहयोग) शिक्षक पारस्परिक व्यवहार के दो आयाम एक द्विआयामी अक्ष का निर्माण करते हैं। यह दो आयाम मिलकर आठ पैमानों का निर्माण करते हैं। जो शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार को दर्शाते हैं। शिक्षकों के सकारात्मक व्यवहार के लिए नेतृत्व, मददगार/मैत्रीपूर्ण, समझ और विद्यार्थियों के प्रति उत्तरदायित्व/ स्वतंत्रता जैसे व्यवहार को दर्शाता और मापता है और शिक्षक के नकारात्मक व्यवहार, अनिश्चित, असंतुष्ट, डॉटना/चेतावनी देने वाला एवं सख्त व्यवहार को दर्शाता और मापता है । इन पैमानों का विवरण रेखाचित्र संख्या 1.1 में प्रदर्शित किया है-

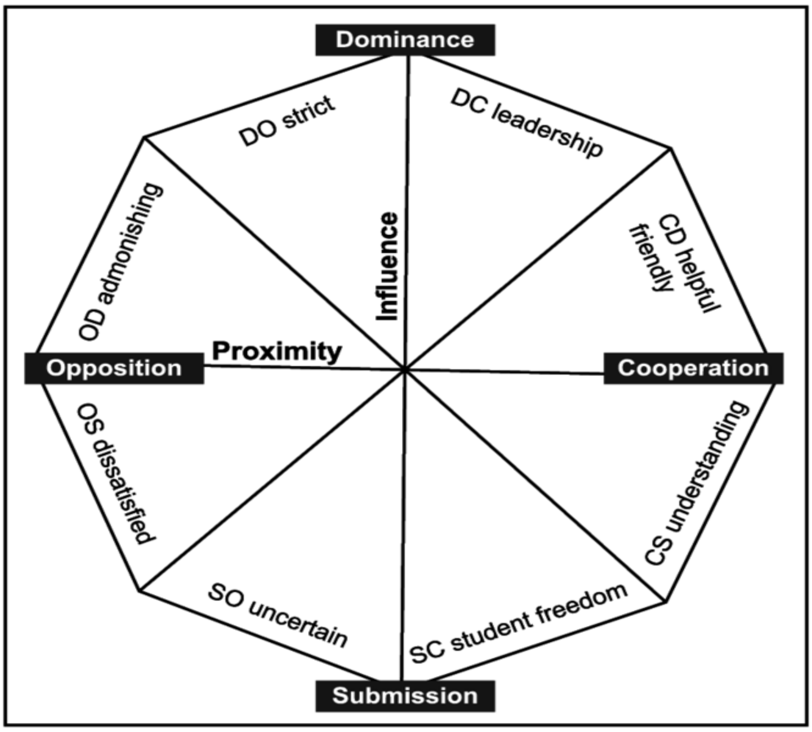

चित्र 1.1 शिक्षक पारस्परिक व्यवहार प्रतिमान
(Source: https://www.researchgate.net/figure/The-Model-for-Interpersonal-Teacher-Behaviour-MITB_fig1_27695571)

शिक्षकों के विद्यार्थियों के प्रति पारस्परिक व्यवहार को दर्शाने वाले इस प्रतिमान के विभन्न आयाम है। जो निम्नलिखित है-

1. नेतृत्व (leadership) - वह स्थिति जिसमें शिक्षक कक्षा का नेतृत्व प्रदान करता है और विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करता है। अतः विद्यार्थी शिक्षक के निर्देशों का शीघ्रता से पालन करते है।

2. मददगार/मैत्रीपूर्ण (Helping/Friendly) - वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति सहायक और मैत्रीपूर्ण होता है। इस प्रकार विध्यार्थी अपनी समस्याओ का समाधान सहज भाव से शिक्षक की सहायता के द्वारा कर पाते है।

3. समझ (Understanding)- वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति समझ/देखभाल एवं चिंता व्यक्त करता है। अतः इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थिओं की देखभाल (परिवार के सदस्यों की तरह) करता है।

4. विद्यार्थी उत्तरदायित्व/स्वतंत्रता (Student Responsibility/Freedom)- वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों को उत्तरदायित्व देने के अवसर प्रदान करता है। इस प्रकार लोकतंत्र में विकेंद्रीकरण प्रवृति फलीभूत होती है।

5. अनिश्चिता (Uncertain)- वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति अनिश्चितता को प्रदर्शित करता है। इस प्रकार के वातावरण में शिक्षक विद्यार्थिओं पर अपना विश्वास खों देता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी का पूर्ण विकास अवरुद्ध हो जाता है।

6. असंतुष्ट (Dissatisfied) – वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति असंतोष प्रदर्शित करता है। और उनकी साहयता करने मे रूचि नहीं लेता है।

7. डांटना/चेतावनी देने वाला व्यवहार (Admonishing)- वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों पर क्रोधित होता है, डांटता है एवं अपना आपा खो देता है। परिणामस्वरूप विद्यार्थी शिक्षक से शिक्षा के क्षेत्र में कुछ भी ग्रहण नहीं कर पाते है।

8. सख्त (Strict) – वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति सख्त रहता है और उन पर नियंत्रण रखता है। फलस्वरूप विद्यार्थी अपनी बात शिक्षक से कह नहीं पाते है।

इस प्रकार उपरोक्त वर्णित प्रथम चार (1-4) सकारात्मक आयाम और अंतिम चार (5-8) तक नकारात्मक आयाम है। जिनको ध्यान मे रखते हुए एक 'शिक्षक अंत:क्रिया' स्केल तैयार किया जाएगा, जो शिक्षकों के कक्षा शिक्षण के दौरान प्रदर्शित पारस्परिक व्यवहार का विद्यार्थियों की धारणाओं पर मूल्यांकन करेगा।

1.1.5. आत्म-प्रभावकारिता (Self-efficacy)

आत्म-प्रभावकारिता से तात्पर्य विशिष्ट प्रदर्शन, उपलब्धि को हासिल करने के लिए आवश्यक व्यवहारों को निष्पादित

करने की क्षमता में किसी व्यक्ति के विश्वास से है। आत्म-प्रभाविकता किसी की अपनी प्रेरणा, व्यवहार और सामाजिक वातावरण पर नियंत्रण करने की क्षमता में आत्मविश्वास को दर्शाती है। ये संज्ञानात्मक आत्म मूल्यांकन सभी प्रकार के मानव अनुभवों को प्रभावित करते हैं, जिसमें वे लक्ष्य भी शामिल है जिनके लिए लोग प्रयास करते हैं।

बंडूरा (1997), के अनुसार आत्म-प्रभावकारिता की एक मजबूत भावना मानव उपलब्धि और व्यक्तिगत कल्याण को बढ़ावा देती है तथा उच्च प्रभावकारिता वाला व्यक्ति चुनौतियों को चीजों के रूप में देखता है, जिससे बचने के बजाए उन पर काबू कैसे पाया जाये, ये लोग असफलता से तेजी से उतरने में सक्षम होते है। इसके विपरीत आत्म-प्रभावकारिता की कम भावना वाले लोग कठिन कार्यों को व्यक्तिगत खतरों के रूप में देखते हैं, उनसे दूर भागते हैं और असफलता प्राप्त होने पर अपनी क्षमताओं पर विश्वास खो बैठते हैं।

आत्म-प्रभावकारिता एक गतिशील निर्माण है इसे चार प्रकार के अनुभवों से प्रभावित किया जा सकता है। ये अनुभव आत्म-प्रभावकारिता की भावना को मज़बूत करते है। यह अनुभव निम्नलिखित है -

1. सक्रिय उपलब्धि - जहां व्यक्ति कार्य का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करते हैं, सक्रिय अनुभव प्रभावकारिता विश्वास का सबसे प्रभावशाली स्त्रोत है क्योंकि ये व्यक्तिगत अनुभवों के परिणाम पर आधारित होते हैं।

2. परोक्ष/विचित्र अनुभव - जहां व्यक्ति अपनी तुलना प्रतिमानों (समान गुण वाले व्यक्तियों) से करते हैं।

3. मौखिक अनुनय - जहां व्यक्तियों को किसी दिये गये कार्य के बारे में विश्वास बनाने के लिए राजी किया जाता है। मौखिक अनुनय का विद्यार्थियों की आत्म-प्रभावकारिता पर अधिक प्रभाव पड़ता हैं।

4. शारीरिक स्थिति - विद्यार्थी अपनी कथित शारीरिक प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपनी आत्म-प्रभावकारिता पर निर्णय लेते हैं जैसे थकान या तनाव जैसी अवस्थाएँ जिन्हें शारीरिक क्षमता को सीमित करने वाला माना जाता है।

इन सभी अनुभवों को पर्यावरण से मिले प्रतिपुष्टि के माध्यम से बेहतर बनाया जा सकता है शिक्षक छात्रों को नये कौशल सीखने के लिए प्रोत्साहित करने और आवश्यक संसाधन प्रदान करके पर्यावरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, निर्देश वितरण, प्रतिपुष्टि, लक्ष्य और आत्म-प्रभावकारिता में वापस लाने के लिए पुरस्कार प्रोत्साहन जैसे कार्यो के माध्यम से

शिक्षार्थी की आत्म-प्रभावकारिता के विकास के विभिन्न चरणों में महत्त्वपूर्ण भूमिका शिक्षक अदा करता है।

1.1.6. मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)

मानसिक स्वास्थ्य में हमारा भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कल्याण शामिल है। यह हमारे सोचने, महसूस करने और कार्य करने के तरीके को प्रभावित करता है। यह निर्धारित करने में मदद करता है कि हम तनाव को कैसे संभालते हैं, दूसरों से कैसे जुड़ते हैं और कैसे स्वस्थ विकल्पों का चुनाव करते है। मानसिक स्वास्थ्य जीवन के हर चरण बचपन और किशोरावस्था से लेकर वयस्कता तक महत्त्वपूर्ण है। यह स्वास्थ्य और कल्याण का एक अभिन्न अंग है जो निर्णय लेने, रिश्ते बनाने और जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे आकार देने की हमारी व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमताओं को रेखांकित करता है। मानसिक स्वास्थ्य एक बुनियादी मानव अधिकार है और यह व्यक्तिगत, सामुदायिक, सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कोविड-19 वैश्विक महामारी के बाद मानसिक स्वास्थ्य हर किसी के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण मुद्दे के रूप में उभर कर आया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के द्वारा 'विश्व मानसिक स्वास्थ्य' (2022) रिपोर्ट प्रकाशित की। इस रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक स्तर पर 10-19 वर्ष के 7 विद्यार्थियों में से एक को मानसिक विकार का अनुभव होता है, जो इस आयु वर्ग में बीमारी के वैश्विक बोझ का 13 प्रतिशत है, 15-29 वर्ष के युवाओं की मृत्यु का चौथा प्रमुख कारण आत्महत्या है। किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य स्थितियों को संबोधित करने में विफल रहने के परिणाम वयस्कता तक बढ़ते हैं, जिससे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों खराब होते हैं और वयस्कों के रूप में पूर्ण जीवन जीने के अवसर सीमित हो जाते हैं। अवसाद चिंता और व्यवहार संबंधी विकार किशोरों में बीमारी और विकलांगता के प्रमुख कारणों में से है। मानसिक स्वास्थ्य की खराब स्थिति वाले किशोर विशेष रूप से सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव, कलंक, शैक्षिक कठिनाईयों, जोखिम लेने वाले व्यवहार,शारीरिक अस्वास्थ्यता और मानवाधिकारों के उल्लंघन के प्रति संवेदनशील होते हैं।

1.1.7. शैक्षिक उपलब्धि (Academic achievement)

शैक्षिक उपलब्धि वह सीमा है जहाँ तक किसी विद्यार्थी ने अपने अल्पकालिक या दीर्घकालिक शैक्षिक लक्ष्य प्राप्त किए

है। शैक्षिक उपलब्धि शैक्षिक परिणामों को प्रदर्शित करती है। जो यह इंगित करती है कि एक विद्यार्थी अपने शैक्षिक लक्ष्यों को किस हद तक हासिल किया है। शैक्षिक उपलब्धि को विद्यार्थियों के ग्रेड, बिंदु, औसत के माध्यम से मापा जा सकता है । एक विद्यार्थी के सफल करियर और स्वास्थ्य जीवन में स्कूल में अच्छा प्रदर्शन, अच्छा शैक्षिक रिकार्ड, शैक्षिक उपलब्धियां महत्त्वपूर्ण भूमिकाओं का निर्वहन करती है। शैक्षिक लक्ष्यों को हासिल करने में विद्यार्थी के जीवन में शिक्षक की भूमिका मुख्य होती है।

लार्सन (2011) के अनुसार, कक्षा में शिक्षक का विद्यार्थियों के साथ सकारात्मक, सम्बन्ध एक प्रभावशाली कारक माना जाता है क्योंकि यह विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और कार्य करने की इच्छा पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। शिक्षक का पारस्परिक व्यवहार शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में प्रभावपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।

1.2.0 समस्या का प्रादुर्भाव एवं औचित्य

शिक्षा मानव की पूर्ण क्षमता को प्राप्त करने और एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास के और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। वैश्विक मंच पर सामाजिक न्याय और समानता, वैधानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत की सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही है। सार्वभौमिक उच्च-स्तरीय शिक्षा वह उचित माध्यम है, जिससे देश की समृद्ध प्रतिभा और संसाधनों का सर्वोत्तम विकास और संवर्धन मानव, समाज राष्ट्र और विश्व की भलाई के लिए किया जा सकता है।

सयुंक्त राष्ट्र संघ और उसके सदस्य देशों (जिसमे भारत भी शामिल है) ने 2015 में सतत विकास एजेंडा (2030), जिसमें 17 सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals,2030) शामिल हैं, जिनको साझा प्रयास के माध्यम से 2030 तक प्राप्त करने लक्ष्य निर्धारित किया हैं, इन लक्ष्यों में शामिल सतत विकास लक्ष्य क्रमांक 3 और 4 क्रमशः सभी के लिए 'बेहतर स्वास्थ्य एवं मानव कल्याण' और 'गुणवत्तापूर्ण शिक्षा' प्रदान करने के लक्ष्यों को प्राप्त करने में शिक्षकों का महत्त्वपूर्ण योगदान होगा। क्योंकि शिक्षा व्यवस्था के केन्द्र में शिक्षक ही वह कड़ी है, जो शिक्षा व्यवस्था में एक स्वतंत्र आत्मा है, एवं शिक्षण और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में नेतृत्व और मार्गदर्शक की भूमिका प्रदान करता है। शिक्षक ही

नागरिकों की हमारी अगली पीढ़ी को सही मायने में आकार देते हैं।

शोधार्थी ने शोध अध्ययन से सम्बन्धित कुछ आंकड़ो, खबरों और रिपोर्टो का अध्ययन किया। जिनका विवरण निम्नलिखित हैं-

शिक्षकों के नकारात्मक व्यवहार से सम्बन्धित अध्ययन - 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009' की धारा -17 में किसी भी तरह् के शारीरिक दंड मानसिक प्रताड़ना व भेदभाव को प्रतिबंधित करता है । इन कानून के बाद से शारीरिक दंड में तो कमी आई है लेकिन चेतावनी और असंतुष्ट व्यवहार दैनिक दिनचर्या का हिस्सा माना जाता है। अनुशासन, कक्षा संचालन और पाठ्यक्रम को पूरा कराने के दबाव में शिक्षक कक्षा में तानाशाह बन जाते हैं, जहां उनके पास विद्यार्थियों को अनुशासित करने और उनके अवांछनीय व्यवहार को सही करने का अधिकार होता है। 'शिक्षक कभी गलत नहीं होता' वाली अवधारणा का जनमानस पर प्रभाव होने के कारण शिक्षक का व्यवहार नकारात्मक भी हो जाता है।

भारत के विभिन्न राज्यों में घटित कुछ घटनायें शिक्षकों के व्यवहार की जांच की आवश्यता को बढावा देती हैं, जैसे द टाइम्स ऑफ इंण्डिया (The Times of India) में 9 अक्टूबर 2023 को प्रकाशित खबर के अनुसार, पलवल ,हरियाणा में कक्षा VIII के एक 13 वर्षीय विद्यार्थी ने अपने शारीरिक शिक्षा शिक्षक की प्रताड़ना से तंग आकर स्कूल की बिल्डिंग से छलांग लगाकर आत्महत्या कर ली। ऐसे ही अमर उजाला में समाचार पत्र में 13 सितम्बर 2023 को छपी खबर के अनुसार, एक शिक्षक के द्वारा एक छात्रा के माथे और बाजु पर चोर लिखकर स्कूल में घुमाने से आहत छात्रा ने स्कूल की तीसरी मंजिल से छलांग लगाकर आत्महत्या करने की कोशिश की। ऐसी ही एक अन्य घटना अमर उजाला समाचार पत्र मे 23 सितम्बर 2023 को प्रकाशित हुई, जिसके अनुसार प्रयागराज उत्तर प्रदेश में एक कक्षा XI की छात्रा ने अपनी शिक्षक के उत्पीडन से तंग आकर खुदखुशी कर ली। एक अन्य केस जिसको माननीय सर्वोच्च न्यायालय स्वतः संज्ञान में लिया और उत्तर प्रदेश सरकार को एक वरिष्ठ भारतीय पुलिस अधिकारी (IPS) द्वारा जांच करने का आदेश दिया। यह केस मुजफ्फर नगर (उत्तर-प्रदेश) का है, जहां एक शिक्षिका एक अल्पसंख्यक समुदाय के एक विद्यार्थी को अन्य विद्यार्थी से थप्पड़ लगवाने और स्वयं भेदभाव करती हुई नजर आती है। (स्रोत BBC News Hindi 26/9/23)।

नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो,भारत (NCRB) एक भारतीय सरकारी एजेंसी है जो 'भारतीय दंड सहिंता' (IPC) द्वारा

परिभाषित अपराधो के आंकड़ो को एकत्रित करके विश्लेषित करती है। NCRB (2021) की रिपोर्ट के अनुसार भारत में लगातार आत्महत्या करने वालों की दर बढ़ रही है, जिसमें आत्महत्या करने वाले कुल लोगों में 8 फीसदी विद्यार्थियों की संख्या है।

मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित अध्ययन - मानसिक स्वास्थ्य की महत्ता को देखते हुए भारत सरकार ने संविधान के अनुच्छेद- 21 के तहत 'स्वास्थ्य सेवा' को मौलिक अधिकार माना है। जिसमें संशोधन करते हुए भारत सरकार ने 2017 में 'मानसिक स्वास्थ्य अधिकार अधिनियम -2017' कानून पारित कर दिया। जिससे भारत के नागरिको को मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित उपचार प्राप्त करने में सहूलियत प्राप्त होने लगी। इसी दिशा में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने स्कूली विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके कल्याण के लिए एक 'मनोदर्पण' नामक पहल जुलाई 2020 को शुरू की। जिसके अन्तर्गत शिक्षा मंत्रालय ने 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद' (NCERT) की सहायता से सम्पूर्ण भारत में स्कूली विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य और विद्यार्थी कल्याण की स्थिति जानने के लिए सर्वे करवाया। जिसकी रिपोर्ट अगस्त 2022 को जारी की गई। उस रिपोर्ट के अनुसार, जब विद्यार्थीगण उच्च प्राथमिक से माध्यमिक स्तर में प्रवेश करते हैं तब उनके व्यक्तिगत और स्कूली जीवन संबंधी संतुष्टि में गिरावट पाई गई । विद्यार्थी माध्यमिक स्तर में पहचान संबंधी, रिश्तों के प्रति संवेदनशीलता में वृद्धि, साथियों का दबाव, बोर्ड परीक्षा का डर, भविष्य में दाखिले एवं कैरियर को लेकर होने वाली चिंताओं तथा अनिश्चितता आदि समस्याओं से जूझते हैं। सर्वेक्षण में पाया गया कि 81 प्रतिशत विद्यार्थियों ने पढ़ाई, परीक्षा और उसके परिणामों को चिंता का प्रमुख कारण बताया ।

इस सर्वे की रिपोर्ट के अधार पर, प्रत्येक शिक्षक को उनके प्रशिक्षण के आधार पर विद्यार्थियों की व्यक्तिगत सामाजिक और शैक्षणिक जीवन की चिंताओं, मनोसामाजिक कल्याण, स्वास्थ्य और कैरियर की आवश्यकताओ से निपटने के लिए प्रथम स्तर के 'परामर्शदाता' के रूप में सक्षम होना चाहिए।

आत्म-प्रभावकारिता से सम्बन्धित अध्ययन - राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के भाग-1 में स्कूल शिक्षा के अंतर्गत तीसरे बिंदु में स्कूली शिक्षा को पूर्ण किये बिना स्कूल छोड़ने वाले (Dropout) विद्यार्थियों की संख्या कम करना और सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच को सुनिश्चित करने की सिफारिश की गई है। 'सर्वशिक्षा अभियान'(वर्तमान में समग्र

शिक्षा)और 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009', जैसी पहल के माध्यम से भारत सरकार ने प्राथमिक शिक्षा में लगभग सभी विद्यार्थियों के नामांकन को प्राप्त करने में उल्लेखनीय प्रगति की है। हालांकि बाद के आंकड़े विद्यार्थियों के स्कूली व्यवस्था में ठहराव संबंधी कुछ गंभीर मुद्दों की ओर इशारा करते हैं।

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा जारी शैक्षिक वर्ष (2020-21) और (2021-22) के नामांकन के आंकड़े स्कूली शिक्षा को पूर्ण किये बिना स्कूल छोड़ने वाले (Dropout) विद्यार्थियों के आंकड़ों में अप्रत्याशित रूप से अन्तर को प्रदर्शित करते हैं। इन आंकड़ो को तालिका संख्या 1.0 में प्रदर्शित किया गया है। (स्रोत Unified district information report UDISE, शिक्षा मंत्रालय,भारत सरकार 2020-21, 2021-2022)

तालिका 1.0 विद्यार्थी नामांकन आंकड़े

विद्यार्थी नामांकन	**2020-21**	**2021-22**
कक्षा 6 से 8	65854199	66790692
कक्षा 8 से 10	39006375	38528631
कक्षा 10 से 12	26922596	28579050

इन आंकड़ो के अनुसार-कक्षा VIII और X के बाद विद्यार्थियों का एक महत्त्वपूर्ण अनुपात शिक्षा प्रणाली से बाहर हो जाता है। जो सभी विद्यार्थी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधा होने के साथ ही बेहद चिंता का विषय है। यह आंकड़े विद्यार्थिओं की कमजोर शैक्षिक आत्म-प्रभावकारिता को प्रदर्शित करते हैं।

शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित अध्ययन- शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट,असर (Annual Status of Education Report,ASER), एक राष्ट्रव्यापी वार्षिक सर्वेक्षण हैं। जो भारतीय विद्यार्थिओं की बुनियादी पढनें और अंकगणित करने की क्षमता का पता लगाता है। असर (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, 14 से 18 वर्ष की आयु के युवाओं में से केवल 43.3 प्रतिशत युवा ही बुनियादी संख्यात्मक विभाजन को ढंग से कर पाते है, ऐसे खराब शैक्षिक परिणाम शिक्षकों के शिक्षण पर भी सवाल खड़ा करते है।

शोधार्थी ने इन रिपोर्टो के अध्ययन के पश्चात शोध अध्ययन से सम्बन्धित पूर्व में हुए शोध कार्यो का अध्ययन किया। जो निम्नलिखित है-

झांग कियान (2022), ने 'द रोल ऑफ़ टीचर्स इंटरपर्सनल बिहेवियर इन लर्नर एकेडमिक अचीवमेंट' (The role of

teacher’s interpersonal behaviour in learner’s academic achievements) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि विद्यार्थियों को अपने शैक्षिक प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए कुछ हद तक अपने पन की भावना रखने की आवश्यकता होती है। इसके अलावा अन्य सकारात्मक भावनात्मक कारक जैसे धैर्य, भलाई, आत्म- प्रभावकारिता, शैक्षणिक सुझाव, प्रेरणा और सम्बन्धित विषय में आनन्द शिक्षक शिक्षार्थी के पारस्परिक संबंधों और शिक्षार्थी की शैक्षिक सफलता के बीच संबंध में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकते है।

झेंग फेंग (2022), ने ‘फास्टरिंग स्टूडेन्टस वेल बींग दा मीडिएटिंग रोल आफ टीचर इन्टरपर्सनल बिहेवियर एण्ड स्टूडेन्ट टीचर रिलेशनशिप्स’ (Fostering students wellbeing the mediating role of teacher interpersonal behaviour and student teacher relationships) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि उच्च गुणवत्ता वाले शिक्षक-शिक्षार्थी संबंध दीर्घकालिक रूप से विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए एक समर्थन का आधार प्रदान करते है। शिक्षक का पारस्परिक व्यवहार जो विद्यार्थियों को समर्थन और देखभाल का एहसास कराता है। उसे भावनात्मक समर्थन के रूप में जाना जाता है ये व्यवहार विद्यार्थियों की भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं में मदद कर सकते हैं।

ली और योग (2021), ने ‘एक्सप्लोरिंग दा इन्फल्यूएंस आफ टीचर स्टूडेन्ट इन्टरेक्शन आन यूनिवर्सिटी स्टूडेन्टस, सेल्फ एफिसेन्सी इन दा फिलिप्ड क्लासरूम’ (Exploring the influence of teacher student interaction on university students self-efficacy in the flipped classroom) अध्ययन मे निष्कर्ष दिया, कि शिक्षक-शिक्षार्थी पारस्परिक संबंध चीनी संदर्भो में शिक्षार्थी की आत्म प्रभावकारिता में सुधार कर सकते है। उन्होंने तर्क दिया कि शिक्षक शिक्षार्थी के सकारात्मक पारस्परिक संबंध विद्यार्थियों के शैक्षिक संदर्भो के प्रति रूझान बढ़ा सकते हैं जो उनकी आत्म प्रभावकारिता को बढ़ावा देते हैं।

ब्रिकंवर्थ एवं अन्य.(2018), ने ‘टीचर स्टूडेंन्ट्स रिलेशनशिप द पोजिटिव एण्ड नेगेटिव्स ऑफ असेसिंग बोथ पर्सपेक्टिव्स’ (Teacher-student relationships: the positives and negatives of assembling both perspectives) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि शिक्षक विद्यार्थी पारस्परिक संबंध शिक्षकों और विद्यार्थियों की संयुक्त और एक दूसरे पर प्रगतिशील अंतदृष्टि के रूप में आधारित होता है, जो बातचीत को लंबे समय तक प्रभावित करता है क्योंकि ये अंतदृष्टि स्मृति में

रखी जाती है और अगामी बातचीत में योगदान देती है और बताया कि विद्यार्थियों को शिक्षक के समर्थन और विश्वसनीयता का एहसास होता है। तव वे अपने शिक्षकों के साथ बातचीत करते है और अपने शिक्षक को ऐसे व्यक्ति के रूप में मानते हैं, जो उनका समर्थन करता है और उनकी शिक्षा को विकसित करने के लिए संकेत प्रदान करता है।

पिशघदाम एवं खाजवी (2014), ने 'डवलेपमेंट एण्ड वेलिडेशन आफ दा स्टूडेन्ट स्ट्रोक स्केल एण्ड एक्जामिन इटस रिलेशन विद एकेडमिक मोटिवेशन' (Development and validation of the student stroke scale and examining its relation with academic motivation) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि जब शिक्षक अपने विद्यार्थियों पर ध्यान देते हैं और उन्हें कक्षा की गतिविधियों में भाग लेने के लिए कहते है। तव शिक्षार्थी उच्च स्तर की प्रेरणा और बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।

हॉलाडे एवं अन्य (2020), ने 'टीचर्स-स्टुडेंट रिलेशनशिप एंड मेंटल हेल्थ हेल्प सीकिंग बिहेवियर अमंग एलेमेन्टरी एंड सेकेंडरी स्टुडेंट इन ओंटारियो कनाडा' (Teacher-Student Relationships and Mental Health Help Seeking Behaviour's Among Elementary and Secondary Student's in Ontario Canada) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि कक्षा के अंदर और बाहर दोनोँ जगह शिक्षक-विद्यार्थी संबंधो की गुणवत्ता इस संदर्भ में भूमिका निभाती है कि विद्यार्थी मानसिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित समस्याओं के लिए उपचार तलाश करते है की नहीं, करते है। अगर करते है तव उन्हें उपचार मिलता है की नहीं। कक्षा मे विद्यार्थिओं भावात्मक चिंताओं के प्रति शिक्षकों का मार्गदर्शन प्रदान करने से उन्हें लाभ हो सकता है।

सिमसेक एवं मुल्लू (2021), ने 'एसोसिएशन्स बिटवीन टीचर्स इंटरपर्सनल बिहेवियर एंड स्टूडेंट्स सोसिओ-इमोशनल लर्निंग स्किल्स इन सोशल साइंस क्लासरूम इन तुर्की' (Associations between teacher interpersonal behaviour and student socio-emotional learning skills in social science classrooms in Turkey) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि शिक्षकों के नेतृत्व ,सहायक ,अनिश्चित और मैत्रीपूर्ण व्यवहार के बारे में विद्यार्थियों की धारणाएँ सकारात्मक थी। लेकिन चेतावनी देने वाला,असंतुष्ट और सख्त व्यवहार विद्यार्थियों के सामाजिक-भावनात्मक सीखने के कौशल से नकारात्मक धारणाओं से सम्बंधित थी।

कन्नम एवं जावेद (2023), ने 'उनवेलिंग दा इम्पॉर्टन्स ऑफ टीचर्स इंटरपर्सनल बिहेवियर इन स्टूडेंट्स अकेडमिक

परफोर्मेंस अ रिव्यु ऑफ़ इंग्लिस लर्निंग' (Unveiling the importance of teacher interpersonal behaviour in student academic performance a review of English learning) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि जो शिक्षक कक्षा में एक मैत्रीपूर्ण और पोषण करने वाले वातावरण को बढावा देते है। वे विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और उनकी शैक्षिणिक सफलता को अधिक प्रोत्साहित करते हैं एवं सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी सम्बंध सीखने की प्रक्रिया में आंतरिक प्रेरणा, और आनंद को बेहतर बनाते हैं।

सेन एवं तियान (2023), ने 'द इफ़ेक्ट ऑफ़ परप्रेकेविएद टीचर्स इंटरपर्सनल बिहेवियर ऑन स्टूडेंट्स लर्निंग इन फिजिकल एजुकेशन : अ सिस्टेमेटिक रिव्यु' (The effect of perceived teacher interpersonal behaviour on student's learning in physical education: a systematic review) अध्ययन में निष्कर्ष दिया, कि शिक्षकों का पारस्परिक शिक्षक व्यवहार विद्यार्थियों की बुनियादी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओ को संतुष्ट एवं निराश करता है। शिक्षकों के सहायक व्यवहार की भावना विद्यार्थियों के सकारात्मक रूप से सीखने की भावना को प्रोत्साहित कर सकती है। इसके विपरीत शिक्षकों के नियंत्रित व्यवहार की धारणा विद्यार्थियों की नकारात्मक सीखने की भावना को उत्तेजित कर सकती है।

लेस्तारी एवं अन्य (2024), ने 'द रोल ऑफ़ टीचर्स इंटरपर्सनल बिहेवियर ऑन लर्निंग आउटकम्स इन दा कांगनेटिव ,अफ्फेक्टिव एंड मोरल डोमेन्स' (The role of teacher interpersonal behaviour on learning outcome's in the cognitive, affective and moral domains) अध्ययन में निष्कर्ष दिया,कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक योग्यताएँ न केवल जन्मजात शक्तियों से प्रभावित होती हैं बल्कि शिक्षकों द्वारा बनाऐ गऐ सीखने के माहौल से भी प्रभावित होती है, और शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के बारे में विद्यार्थियों की धारणाएं विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक-भावात्मक और नैतिक क्षेत्रों में सीखने के परिणामों के साथ महत्वपूर्ण रूप से सहसम्बन्धित होती हैं।

शिक्षकों का सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार विद्यार्थियों पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है इसलिए शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का विद्यार्थियों के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव की समीक्षा करना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक,भावात्मक व्यावहारिक परिणामों पर शारीरिक दंड के प्रभाव का बड़े पैमाने पर अध्ययन किया गया है मगर शिक्षक के नकारात्मक व्यवहार के कम चरम रूपों का प्रभाव जैसे कि डॉटना (चिल्लाना, गुस्सा

व्यक्त करना) और असंतुष्ट व्यवहार (स्पष्ट असंतोष दिखाना, उदासी दिखाना, विद्यार्थियों के सीखने के इरादों पर सवाल उठाना या संदेह करना और आलोचना करना) का अध्ययन कम किया गया है।

उपरोक्त शोध अध्ययनों की समीक्षा से ज्ञात होता है कि शिक्षक पारस्परिक व्यवहार के साथ विभिन्न चरों जैसे शैक्षिक प्रदर्शन, विद्यार्थी कल्याण, शिक्षक विद्यार्थी सम्बन्ध, अभिप्रेरणा, सामाजिक भावात्मक कौशल सीखने, शारीरिक शिक्षा और अंग्रेजी भाषा सीखने के साथ स्वतन्त्र एवं आश्रित चरों के साथ किया गया है।

शोधार्थी को कोई ऐसा शोध अध्ययन प्राप्त नहीं हुआ जहाँ मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षिक उपलब्धि एक साथ शोध समस्या के रूप में प्रयुक्त हुए हो एवं इन शोध अध्ययनों की समीक्षा से यह भी ज्ञात होता हैं कि शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार से सम्बंधित अधिकतर शोध अध्ययन विदेशों में ही किये गये हैं। भारत के पदानुक्रमित सामाजिक व्यवस्था में शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार से सम्बन्धित शोध अध्ययनों का अभाव है, इसलिए शोधार्थी ने इस शोध समस्या का चयन किया है।

1.2.1. शोध प्रश्न

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) द्वारा सुझाये गये शैक्षिक लक्ष्यों, सिफारिशों एवं उसके क्रियान्वयन में और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में शिक्षकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होगी। विद्यार्थियों के समग्र विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने में शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहारों की भूमिका, वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट, (ASER 2023), विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट (WHO 2022), राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्ट (2021), भारतीय शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी विद्यार्थी नामांकन रिपोर्ट (UDISE), भारत के कुछ राज्यों में शिक्षकों के नकारात्मक व्यवहार से सम्बंधित घटनाएँ (समाचार पत्रों के अनुसार) उपरोक्त वर्णित सूचनाओं, आंकड़ों और शोध अध्ययनों की समीक्षा करने के पश्चात् शोधार्थी के मस्तिष्क में शोध प्रश्न उत्पन्न हुए जिनकी जिज्ञासा की पूर्ति हेतु शोधार्थी अपने शोध अध्ययन में करना चाहता है। यह शोधप्रश्न निम्नलिखित हैं-

1. क्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का प्रभाव पड़ता है?

2. क्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म प्रभावकारिता पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का प्रभाव पड़ता है?

3. क्या माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का प्रभाव पडता है?

उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्ति हेतु शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत समस्या को शोध समस्या के रूप में चयनित किया है।

1.3.0 समस्या कथन:

"माध्यमिक स्तरीय विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, आत्म-प्रभावकारिता और शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन"

"A Study of The Impact of Teacher's Interpersonal Behaviour on Mental Health, Self-Efficacy and Academic Achievement of Secondary Level Students"

1.4.0 अध्ययन में प्रयुक्त पदों की व्याख्या -

1.4.1 माध्यमिक स्तर -

सैद्धान्तिक परिभाषा -राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के अनुसार "माध्यमिक स्तर 14 से 18 वर्ष की आयु के कक्षा IX से XII तक के विद्यार्थियों को शामिल करता है। माध्यमिक स्तर को दो वर्गो में विभाजित किया गया है पहला वर्ग IX और X और दूसरा वर्ग XI और XII शामिल करता है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों से अभिप्राय14 से 16 वर्ष की आयु के कक्षा IX और X में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है। वर्तमान शोध अध्ययन में केवल कक्षा IX में अध्ययनरत विद्यार्थियों को प्रतिनिधि के रूप में माना गया है।

1.4.2. शिक्षक पारस्परिक व्यवहार (Teacher interpersonal behaviour)

सैद्धान्तिक परिभाषा – फ्लैण्डर (1959) के अनुसार- "शिक्षक कक्षा में प्रेरणा और नियंत्रण के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों के साथ अन्तः क्रिया करता है। यह अन्त:क्रिया मौखिक और गैर-मौखिक व्यवहारों के माध्यम से विद्यार्थियों और शिक्षकों के मध्य कक्षा संचालन के समय होती है।"

सैद्धान्तिक परिभाषा – बुवेल्स एवं लेवी (1985) के अनुसार – "शिक्षक पारस्परिक व्यवहार कक्षा संचालन के समय शिक्षक के प्रभुत्व (विद्यार्थियों के साथ संचार में शिक्षक के नियंत्रण की सीमा) और निकटता (शिक्षक और विद्यार्थियों में

सहयोग की सीमा) की श्रंखला को संदर्भित करता है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक पारस्परिक व्यवहार से अभिप्राय शिक्षकों के सकारात्मक और नकारात्मक व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों की अवधारणा से है।

1.4.3 आत्म-प्रभावकारिता

सैद्धान्तिक परिभाषा – बंडूरा (1997) के अनुसार, "आत्म-प्रभावकारिता एक विशिष्ट स्थिति में विशिष्ट आत्मविश्वास है जो यह विश्वास दिलाता है कि व्यक्ति द्वारा हाथ में लिये गये कार्य को संभालने में वह सक्षम है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत शोध अध्ययन में आत्म-प्रभावकारिता से तात्पर्य विद्यार्थियों के समक्ष आने वाली शैक्षिक समस्याओं को सफलतापूर्वक हल करने की अपनी क्षमताओं के आत्मविश्वास से है।

1.4.4. मानसिक स्वास्थ्य

सैद्धान्तिक परिभाषा - विश्व स्वास्थ्य संगठन (2022) के अनुसार, "मानसिक स्वास्थ्य मानसिक कल्याण की एक स्थिति है जो लोगों को जीवन के तनावों से निपटने, अपनी क्षमताओं का एहसास करने, अच्छी तरह से सीखने और अच्छी तरह से काम करने और अपने समुदाय में योगदान करने में सक्षम बनाती है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत शोध अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य से तात्पर्य विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कल्याण और उनकी संज्ञानात्मक, भावात्मक, और व्यावहारिक समायोजन करने की क्षमता से है।

1.4.5 शैक्षिक उपलब्धि

सैद्धान्तिक परिभाषा - गुड (1973) के अनुसार "शैक्षिक उपलब्धि स्कूल के विषय में प्राप्त ज्ञान या विकसित कौशल है जो आमतौर पर परीक्षण स्कोर या शिक्षक द्वारा दिये गये अंकों या दोनों के द्वारा निर्दिष्ट होता है।"

कार्यात्मक परिभाषा - प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यार्थियों के कक्षागत शैक्षिक प्रदर्शन से है, परीक्षा में प्राप्तांकों को विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के रूप में दर्शाया जायेगा।

1.5.0 अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में निम्न शोध उद्देश्यो को निर्धारित किया गया है जो निम्नलिखित है:

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म प्रभावकारिता का अध्ययन करना।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

4. माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों का विद्यार्थियों के प्रति पारस्परिक व्यवहार का अध्ययन करना

5 . माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म-प्रभावकारिता पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन करना।

7. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रभाव का अध्ययन करना।

1.6.0 शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

H_o1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

H_o2. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आत्म प्रभावकारिता पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

H_o3. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

1.7.0 अध्ययन में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर – शिक्षक पारस्परिक व्यवहार

आश्रित चर - 1. मानसिक स्वास्थ्य

2. आत्म-प्रभावकारिता

3. शैक्षिक उपलब्धि

1.8.0 अध्ययन विधि:

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी द्वारा अनुसंधान की पूर्व कार्योत्तर/घटनोत्तर विधि (Ex-Post Facto Research) का प्रयोग किया जायेगा।

1.9.0 अध्ययन की जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या का सम्बन्ध उत्तर प्रदेश राज्य के फ़िरोज़ाबाद जनपद में स्थित यू.पी.बोर्ड के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों से है।

1.10.0 अध्ययन का न्यादर्श

माध्यमिक स्तर के कक्षा IX में अध्ययनरत गणित विषय के 600 विद्यार्थी इस शोध अध्ययन के न्यादर्श हैं।

1.11.0 न्यादर्श प्रतिचयन प्रक्रिया

प्रस्तुत अध्ययन में मिश्रित न्यादर्श चयन विधि द्वारा फ़िरोज़ाबाद जनपद की पांचो तहसीलों से माध्यमिक स्तर के 20 विद्यालयों (चार विद्यालय प्रति तहसील, 5×4=20) को सोद्देश्य न्यादर्शन विधि द्वारा चयन किया जायेगा। इन विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा IX के 600 विद्यार्थियों (30 विद्यार्थी प्रति विद्यालय 30×20=600) को सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया जायेगा। जिनका एक शैक्षणिक वर्ष के शुरूआत और अन्त में कागज पेन्सिल आधारित सर्वेक्षणों के माध्यम से डेटा को एकत्रित किया जायेगा। जिसमें शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों की अवधारणा को शिक्षक अन्तःक्रिया प्रश्नावली उपकरण की सहायता से मापा जायेगा। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण करने के पश्चात् शिक्षकों के पारस्परिक व्यवहार के विद्यार्थियों के ऊपर पड़ने वाले प्रभाव की जांच की जायेगी। न्यादर्श प्रतिचयन प्रक्रिया को रेखाचित्र संख्या 1.2 में प्रदर्शित किया गया है-

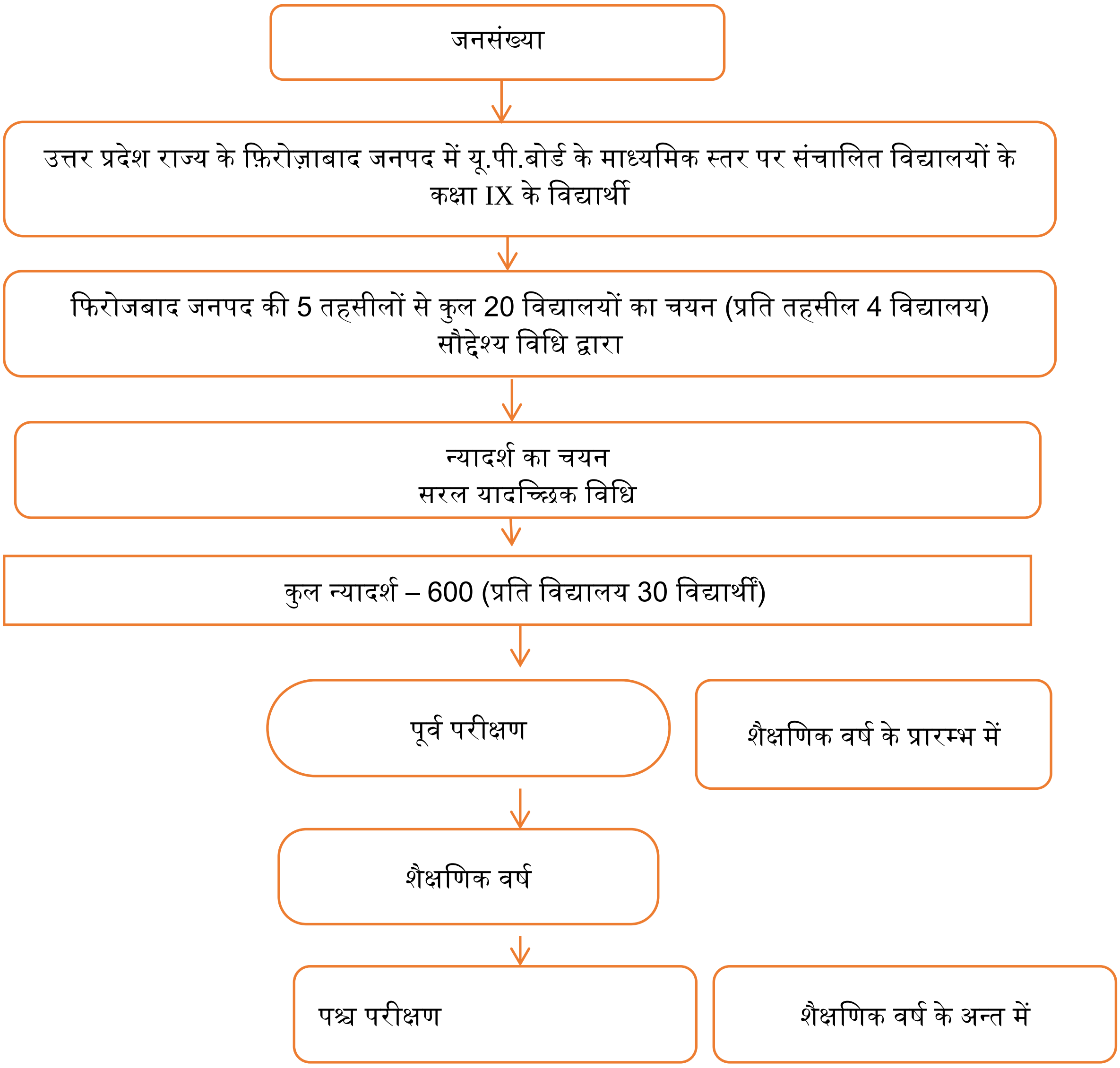

चित्र 1.2 न्यादर्श प्रतिचयन प्रक्रिया

1.12.0 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण -शोधार्थी के द्वारा चयनित शोध समस्या के संदर्भ में प्रदत्त एकत्रीकरण हेतु निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा, जिनका विवरण उपकरण विवरण तालिका संख्या 1.2 में वर्णित है-

तालिका 1.2 उपकरण विवरण तालिका

क्रमांक	उपकरण का नाम	निर्माण कर्ता	आयु -वर्ग	वर्ष	आयाम
1.	'मेंटल हेल्थ स्केल'	सुषमा तलेसरा एवं अख्तर बानो	14-20 वर्ष	2017	स्कूल,होम,पीयर ग्रुप
2.	'सेल्फ एफीकेसी स्केल'	एस. डहिया एवं एन. कुमारी	13-18 वर्ष	2018	फिजिकल, सोशल, इमोशनल, अकेडमिक, स्पीरिचुअल
3.	शैक्षिक उपलब्धि	पूर्व एवं वर्तमान कक्षा परीक्षा परिणाम	-	-	-

4.	'शिक्षक अंन्तःक्रिया स्केल'	स्वनिर्मित	-	-	-

1.13.1 शिक्षक अन्तःक्रिया स्केल के आयामों का वर्णनात्मक विवरण –

शिक्षक अन्तःक्रिया स्केल को शिक्षक पारस्परिक व्यवहार प्रतिमान के दो आयाम प्रभाव (असहमति-सहयोग) और निकटता (प्रभुत्व-अधीनता) जो मिलकर आठ पैमाने बनाते हैं, इन्हीं पैमानों के आधार तैयार किया जायेगा। ये पैमाने: 'शिक्षक अंन्तःक्रिया स्केल' तालिका संख्या 1.3 में निम्नलिखित है-

तालिका 1.3 शिक्षक अन्तःक्रिया स्केल'

क्रमांक	पैमाना	विवरण
1.	नेतृत्व	वह स्थिति जहां तक शिक्षक कक्षा को नेतृत्व प्रदान करता है और विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करता है।
2.	मददगार/मैत्रीपूर्ण व्यवहार	वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति सहायक और मैत्रीपूर्ण होता है।
3.	समझ	वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति समझ/देखभाल एवं चिंतन व्यक्त करता है।
4.	विद्यार्थी उत्तरदायित्व/ स्वतंत्रता	वह स्थिति जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों को अपनी गतिविधियों/उत्तरदायित्व को संभालने के अवसर प्रदान करता है।
5.	अनिश्चितता	वह स्थिति जहां तक शिक्षक अनिश्चितता को प्रदर्शित करता है।
6.	असंतुष्ट	वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति असंतोष प्रदर्शित करता है।
7.	डॉटना/चेतावनी देने वाला व्यवहार	वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति क्रोध प्रकट करता है, डॉटता है और अपना आपा खो देता है।
8.	सख्त	वह स्थिति जहां तक शिक्षक विद्यार्थियों के प्रति सख्त रहता है और उन पर नियंत्रण रखता है।

यह उपकरण विशेषज्ञों के परामर्श व निर्देशन और विद्यार्थियों के साक्षात्कार के माध्यम से तैयार की जायेगा। यह उपकरण शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार के प्रति विद्यार्थियों की बनने वाली अवधारणा पर आधारित होगा। यह उपकरण एक रेटिंग स्केल होगा जिसमे विद्यार्थियों की राय को 5 पोइन्ट लिकर्ट स्केल (दृढ़तापूर्वक सहमत, सहमत, न तो सहमत और न ही असहमत, असहमत, पूरी तरह असहमत) पर मापा जायेगा। फिर उपकरण की वैधता और विश्वसनीयता का परीक्षण किया जायेगा।

1.13.0 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध कार्य में प्राप्त आंकड़ों को निम्न सांख्यिकी प्रविधियों द्वारा विश्लेषित किया जायेगा।

वर्णनात्मक सांख्यिकीय प्रविधि - मध्यमान, मानक विचलन (Mean, Standard Deviation)

निष्कर्षात्मक सांख्यिकीय प्रविधि – सहप्रसरण विश्लेषण (ANCOVA)

1.14.0 शोध अध्ययन का परिसीमांकन

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त फिरोजाबाद जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित रखा जायेगा।

2. प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यालयों के कक्षा IX में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।

3. प्रस्तुत शोध अध्ययन गणित विषय में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक ही सीमित रहेगा।

1.15.0 अध्ययन की सार्थकता

- यह शोध अध्ययन शिक्षक गतिशीलता के प्रायः अनदेखे पहलुओं पर प्रकाश डालेगा और वे सीखने के परिणामों को, विद्यार्थियों के कल्याण को कैसे प्रभावित करते हैं,आदि महत्त्वपूर्ण पक्षों पर शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान अन्तःदृष्टि प्रदान कर सकेगा।
- यह शोध अध्ययन विद्यार्थियों के सामाजिक भावनात्मक एवं शैक्षिक प्रदर्शन पर शिक्षकों द्वारा प्रदर्शित पारस्परिक व्यवहारों के स्थायी प्रभावों की व्यापक समझ प्रदान कर, शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान योगदान प्रदान कर सकेगा।
- यह शोध अध्ययन सेवापूर्व एवं सेवारत शिक्षकों को अपने पारस्परिक व्यवहार कौशलों में वृद्धि और नकारात्मक व्यवहारों को सुधारने के लिए उनके शैक्षिक अनुभवों में विकासात्मक अन्तः दृष्टि प्रदान करेगा।
- शोध अध्ययन के निष्कर्ष अधिक सकारात्मक और प्रभावशाली शिक्षण वातावरण बनाने के लिए शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रमों, स्कूल नीतियों और कक्षा प्रथाओं के संचालन को एक अन्तःदृष्टि प्रदान करेंगें।

REFERENCES

- A.M. Fall *et al.* (2012). High school dropouts: Interactions between social context, self-perceptions. school engagement, and student dropout Journal of Adolescence.
- Ahuja, Sona. (2009). Impact of non-verbal communication of B ED student teachers on their classroom transaction Maharaja Sayajirao University of Baroda. http://hdl.handle.net/10603/58170

- B.J. Zimmerman (2000) Self-efficacy: An essential motive to learn Contemporary Educational Psychology
- Brekelmans, M., Wubbels, T., & Levy, J. (1993). Student performance, attitudes, instructional strategies and teacher-communication style. In T. Wubbels & J. Levy (Eds.), *Do you know what you look like? Interpersonal relationships in education* (pp. 56–63). London: Falmer Press.
- D. Urhahne (2015) Teacher behaviour as a mediator of the relationship between teacher judgment and students' motivation and emotion Teaching and Teacher Education .
- Den Brok, P., Fisher, D., Wubbels, T., Brekelmans, M., & Rickards, T. (2006). Secondary teachers' interpersonal behaviour in Singapore, Brunei and Australia: A cross-national comparison. *Asia-Pacific Journal of Education, 26*(1), 79–95.
- G. Hackett, N.E. Betz (1989), An exploration of the mathematics self-efficacy/mathematics performance correspondence Journal for Research in Mathematics Education, 20 pp. 263-271
- Goh, S. C., & Fraser, B. J. (1998). Teacher interpersonal behaviour, classroom environment and student outcomes in primary mathematics in Singapore. *Learning Environments Research, 1*, 199–229.
- Gyan Lestari *et al* (2024). The role of Teacher interpersonal behaviour on learning outcomes in the, affective and moral domain.
- Harmer, J. (2011). How to Teach English. Longman: Person Education Limited https://link.springer.com/article/10.1007/s10984-009-9059-6
- J, Halladay. 2020). Teacher-student relationships and mental health help seeking behaviour's among elementary and secondary students in Ontario Canada, Journal of School Psychology Volume 81,Pages 1-10,
- J.M. van Uden *et al* (2014).Engaging students: the role of teachers beliefs and interpersonal teacher behaviour in fostering student engagement in vocational education Teaching and Teacher Education
- LaFrance and Mayo (1978), *Moving Bodies: Nonverbal Communication in Social Relationships*
- L. khanam and Dr.javed (2023) Unveiling the importance of Teacher's interpersonal behaviour in student's academic performance a review of English learning .

- Leary, T. (1957). Interpersonal Diagnosis of Personality. New York: Ronald Press Co.
- M. Anand (2014) Corporal punishment in schools: Reflections from Delhi, India Practice
- M. Brekelmans (1989) Interpersonal teacher behaviour in the classroom
- Maureen E. Brinkworth, Joseph McIntyre, Anna D. Juraschek, Hunter Gehlbach, 2018 Teacher-student relationships: The positives and negatives of assessing both perspectives, Journal of Applied Developmental Psychology, Volume 55, Pages 24-38, ISSN 0193-3973, https://doi.org/10.1016/j.appdev.2017.09.002
- P. den Brok *et al.* (2004) Interpersonal teacher behaviour and student outcomes School Effectiveness and School Improvement
- P. den Brok *et al.* Students' perceptions of secondary teachers' interpersonal style in six countries: a study on the validity of the questionnaire on teacher interaction P. den Brok *et al.*
- Pearson, P. D. (2009). The roots of reading comprehension instruction. In S. E. Israel and G. G. Duffy (Eds.), Handbook of Research on Reading Comprehension (pp. 3-31). New York: Routledge.
- R.W. Lent, S.D. Brown, K.C. (1984) Larking Relation of self-efficacy expectations to academic achievement and persistence Journal of Counseling Psychology, 31 , pp. 356-362
- Reza Pishghadam, Gholam Hassan Khajavy, Development and validation of the Student Stroke Scale and examining its relation with academic motivation, Studies in Educational Evaluation Volume43, (https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S0191491X14000200
- Simsek.I.and Mutlu,G.(2021) Associations between teacher's interpersonal behaviour and student's socio-emotional learning skills in social science classrooms in Turkey. International journal of contemporary educational research8(3).119-132.doi
- T. Bouffard-Bouchard, S. Parent, S. Larivee (1991) Influence of self-efficacy on self-regulation and performance among junior and senior high-school age students International Journal of Behavioural Development, pp. 153-164
- T. Leary (1957) An interpersonal diagnosis of personality
- Tian L and Shen J (2023) t=The effect of perceived teachers' interpersonal behaviour on students' learning in physical education: a systematic review. Front.psychol.14:1233556.

http://doi.org/10.3389/fpsyg.2023.123556

- T. Wubbels *et al.* (2005) Two decades of research on teacher-student relationships in class International Journal of Educational Research Teaching and Teacher Education, Volume 50, 2015, Pages 79-89, ISSN 0742-051X, https://doi.org/10.1016/j.tate.2015.04.007
- Wubbels, et al, (1985). Discipline problems of beginning teachers interactional teacher behaviour mapped out. abstracted in resources in education ,20,12,p.153, ERIC document:260040.
- Yang, Shanshan & Li, Lin. (2021). Exploring the Influence of Teacher-Student Interaction on University Students' Self-Efficacy in the Flipped Classroom. Journal of Education and Learning. http://doi.org/10.84.10.5539/jel.v10n2p84
- Z. Misbah *et al.* (2015) Teacher interpersonal behaviour and student motivation in competence-based vocational education: Evidence from Indonesia Teaching and Teacher Education
- Zainun Misbah, Judith Gulikers, Ridwan Maulana, Martin Mulder, (2015) Teacher interpersonal behaviour and student motivation in competence-based vocational education: Evidence from Indonesia,
- Zheng, Fang. (2022). Fostering Students' Well-Being: The Mediating Role of Teacher Interpersonal Behaviour and Student-Teacher Relationships. Frontiers in Psychology. 12. 0.3389/fpsyg.2021.796728.

https://pwonlyias.com/upsc-notes/kothari-education-commission-1964-66/

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_final_HINDI_0.pdf

https://www.samareducation.com/2022/06/ryans-theory-of-teacher-behaviour.html

https://link.springer.com/article/10.1007/s10984-009-9059-6

https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC9247453/

http://www.teachertrainingcollege.org/wp-content/uploads/2021/01/SC-5.pdf

https://www-bbc-com.translate.goog/news/world-asia-india-66629952

https://iris.who.int/bitstream/handle/10665/356119/9789240049338-eng.pdf

https://thewire.in/society/share-of-students-among-indian-suicide-victims-has-grown-over-last-10-

years#

https://img.asercentre.org/docs/Publications/ASER%20Reports/ASER%202017/aser2017fullreportfinal.pdf

https://sdgs.un.org/goals

https://timesofindia.indiatimes.com/city/gurgaon/thrashed-by-teachers-class-8-boy-jumps-off-school-building-injured/articleshow/104270533.cms

https://www.amarujala.com/uttar-pradesh/allahabad/11th-class-student-hanged-after-talking-to-teacher-on-phone-2023-09-08